जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – अक्टूबर 2023 ।। अंक – 39 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

अन्नु की उद्यमशीलता से प्रगति का मार्ग हुआ प्रशस्त
(पृष्ठ – 02)

उद्यमिता से समृद्धि की ओर जुली ने बढ़ाया कदम
(पृष्ठ – 03)

समहुत जीविका कृषि उत्पादक कंपनी लिमिटेड,भोजपुर
(पृष्ठ – 04)

वित्तीय साक्षरता द्वारा वित्तीय पारदर्शिता की पहल

जीविका द्वारा गठित स्वयं सहायता समूह सदस्यों को आर्थिक रूप से सबल बनाने हेतु समूह में वित्तीय लेन–देन एक अनिवार्य प्रक्रिया है। इस प्रकिया को समूह के 'पंच सूत्र' में शामिल किया गया है। समूह गठन के दौरान होने वाली पहली बैठक में ही समूह के सदस्यों को बचत करने की आदत को विकसित करने हेतु प्रेरित किया जाता है। सदस्यों द्वारा समूह में की जाने वाली बचत की यह राशि सभी सदस्यों के हाथों से गुजरते हुए समूह के कोषाध्यक्ष तक पहुँचती है। जीविका मित्र इसे समूह की लेखांकन पुस्तिका में दर्ज करती है। इस प्रक्रिया को अपनाने का स्पष्ट कारण यह है कि सभी सदस्यों को इस बात की जानकारी हो जाए कि समूह के किन–किन सदस्यों के द्वारा आज की बचत की गई है। इससे एक तरफ जहां समूह के सदस्यों में पारदर्शिता बनी रहती हैं, वहीं दूसरी तरफ सदस्य अपनी बचत की राशि को लेखांकन की पुस्तिका में दर्ज होते देख पाती हैं।

समूह में एक अन्य अनिवार्य प्रक्रिया अपनाई जाती है। समूह की साप्ताहिक बैठक में प्रत्येक बार समूह के एक सदस्य को उस दिन की बैठक के लिए अध्यक्ष चुना जाता है। इस प्रकार उस बैठक की सभी कार्यवाही उनके दिशा–निर्देशन में संपन्न करायी जाती है। बचत की राशि को इकठ्ठा कर उसे गिनती के साथ सभी को दिखाना और बोलकर सुनाना होता है। इस प्रक्रिया को अपनाने से जहाँ समूह में वित्तीय पारदर्शिता आती है, वहीं समूह के सभी सदस्यों को वित्तीय रूप से साक्षर बनने का अवसर भी प्राप्त होता है। बैठक के दौरान समूह के प्रत्येक सदस्य के पास अपना व्यक्तिगत बचत पासबुक होता है। इस पासबुक में जीविका मित्र के द्वारा प्रत्येक सदस्य की संचयी बचत को बैठक में ही दर्ज किया जाता है और उस सम्बंधित सदस्य को इससे अवगत कराया जाता है। इससे सभी सदस्यों को हर बैठक में इस बात की जानकारी मिल जाती है कि समूह में उनकी कुल बचत कितनी हो चुकी है, उन्होंने बैठक में कितनी राशि ऋण ली है और उन्हें कितनी राशि क़िस्त के रूप में वापस करना है।

समूह की साप्ताहिक बैठक की कार्यवाही के समापन से पहले जीविका मित्र की यह जिम्मेदारी होती है कि वह उस बैठक में लिए गए सभी निर्णयों को पढ़कर सबसे साझा करे। समूह की बैठक में सदस्यों द्वारा ऋण लेने तथा ऋण की वापसी का मुद्दा भी शामिल रहता है। इन आंकड़ों को सबसे साझा करने का कारण यही है कि सभी सदस्य अपने समूह की वित्तीय स्थिति से भली भांति परिचित रहें। समूह स्तर पर बची हुई हाथ की राशि, सदस्यों में ऋण के रूप में वितरित राशि तथा बैंक में बैंक बचत पास बुक में जमा राशि के अलावे बैंक ऋण की राशि का लेखा–जोखा के प्रस्तुतिकरण से समूह के सदस्यों में वित्तीय साक्षरता का संधारण होता है। समूह में बैंक से लिए गए ऋण एवं उसकी वापसी की विवरणी भी सभी सदस्यों से साझा की जाती है।

समूह स्तर पर प्रत्येक वित्तीय लेन देन की जानकारी सभी सदस्यों के पास रहती है। इस जानकारी के कारण समूह में किसी भी प्रकार की वित्तीय अनियमितता की संभावना को रोका जा सकता है। दूसरी तरफ बैंकों के साथ नियमित रूप से जमा निकासी करने से समूह सदस्य बैंकिंग कार्य प्रणाली से बेहतर तरीके से अवगत हो जाते हैं।

बांस निर्मित उत्पादों के व्यवसाय से गुड़िया हो रही सशक्त

गुड़िया देवी सारण जिले के मढ़ौरा प्रखण्ड अंतर्गत खोरमपुर गाँव की रहने वाली हैं। गुड़िया देवी सरस्वती जीविका महिला बाँस उत्पादक समूह की सदस्य हैं। समूह से जुड़ने से पहले गुड़िया देवी के पति दिल्ली में रहकर मजदूरी करते थे। पति की आय से ही गुड़िया के परिवार का पालन–पोषण होता था। कोविड की वजह से गुड़िया के पति को वापस घर आना पड़ा। रोजगार छूटने के कारण गुड़िया के परिवार की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गयी और इनके परिवार को विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। इस परिस्थिति से उबरने के लिए गुड़िया देवी जुलाई 2020 में समूह से जुड़कर 20 हजार रुपए का ऋण लिया। दीदी पारंपरिक रूप से बाँस निर्मित उत्पाद बनाने का कार्य करती थी। अतः उन्होंने ऋण के पैसे से अपने इस हस्तकला को कमाई का जरिया बनाया। गुड़िया बाँस का उपयोग कर मुख्यतः डलिया निर्माण का कार्य करने लगी। निर्मित बस्तुओं का उचित बाजार और उचित मूल्य न मिलने से स्थानीय स्तर पर काफी कठिनाई के बाद काफी कम मात्रा में वस्तुओं की बिक्री हो पाती थी। गुड़िया ने इस समस्या को संकुल संघ में साझा किया और इस कार्य से जुड़ी अन्य दीदियाँ को भी जागरूक किया।

गुड़िया देवी के प्रयास एवं संकुल स्तरीय संघ की बैठक में सर्वसम्मति से 30 दीदियों को जोड़ कर उत्पादक समूह का गठन किया गया। जिला एवं प्रखण्ड टीम के मार्गदर्शन में डलिया के साथ साथ गुलदस्ता, वाल स्टैंड, फोटो फ्रेम एवं अन्य गिफ्ट सामग्री का निर्माण किया गया। जीविका के प्रयास से इन्हें उचित बाजार भी मिलने लगा। आज परियोजना से जुड़ाव के बाद न सिर्फ गुड़िया की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में बदलाव हुआ है, बल्कि वह स्वरोजगार द्वारा सशक्तीकरण की नई कहानी भी लिख रही हैं। जिला में बिहार दिवस के अवसर पर उनके द्वारा तैयार किए गए उत्पाद से लगभग 2500 रुपए की आमदनी हुई तथा इसके अलावा इन्होंने जिला स्तर पर आयोजित अन्य कार्यक्रमों में भी बाँस निर्मित उत्पादों की अच्छी बिक्री की है।

अन्नु की उद्यमशीलता से प्रगति का मार्ग हुआ प्रशस्त

गया जिले के मोहनपुर प्रखण्ड के लखीपुर पंचयत की अन्नू कुमारी दिव्या जीविका समूह की सदस्य हैं। अन्नु ने इण्टर तक की पढ़ाई की है। उनके पति एक निजी स्कूल में शिक्षक के रूप में काम करते हैं। अन्नु के परिवार की आय पर्याप्त नहीं थी। अन्नू अपने परिवार के जीविकोपार्जन संवर्धन के लिए कुछ करना चाहती थी। उन्हें 2018 में सामुदायिक संगठनों के माध्यम से सौर अध्ययन लैंप परियोजना में सामुदायिक मोबिलाइज़र के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। वह अपने प्रखंड मोहनपुर में एक वितरक के रूप में चयनित हुईं। अन्नु ने परियोजना से बुनियादी तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त किया और ग्रामीण विद्यालयों में 3000 सौर अध्ययन लैंप वितरित किए। इस दौरान लैंप के वितरण से उन्होंने 6 महीने में 50 हजार रुपये से अधिक की आय अर्जित की। सोलर लैंप के एक वर्ष तक ख़राब होने की स्थिति में इसे परियोजना के माध्यम से ठीक करना था, जिसके लिए तकनीशियन के रूप में अन्नु को चयनित किया गया। उद्यमिता प्रशिक्षण के बाद उन्होंने 25000 रूपए निवेश कर सौर ऊर्जा उपकरण का व्यवसाय आरंभ किया। इससे उन्हें औसतन 3500 रूपए प्रति माह की आय होने लगी। जीविका द्वारा सौर ऊर्जा के शेत्र में अभिनव पहल करते हुए गया में ''जे–वायर्स'' उत्पादक कंपनी का गठन किया गया जिसका संचालन जीविका दीदियों द्वारा किया जा रहा है।

वर्ष 2020 में अन्नु शेयरधारक के रूप में जे–वायर्स के साथ जुड़ीं और अपने सोलर मार्ट में बिक्री हेतु लिए गुणवत्तापूर्ण उत्पादों की खरीदारी शुरू की, जिससे उन्हें जीविकोपार्जन का साधन मिल गया। उन्हें सामुदायिक संगठन से जुड़ी जीविका दीदियों को सौर ऊर्जा उत्पादों की आपूर्ति करने के लिए जीविका और जे–वायर्स के सहयोग से टेरी की सौर ऊर्जा परियोजना के तहत काम करने का अवसर भी मिला। अब अन्नु एवं उनके परिवार का जीवन बदल गया है। वह उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बनायी है।

उद्यमिता से समृद्धि की ओर जुली ने बढ़ाया कदम

जुली देवी खगड़िया जिला अंतर्गत खगड़िया प्रखंड के मथुरापुर की रहने वाली है। इनका सपना अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार लाना था। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उनका प्रयास जारी था। इसी क्रम में उन्हें जीविका समूह के बारे में जानकारी मिली और वह मुस्कान जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनी।

समूह सदस्य बनने के बाद जुली देवी ने प्रशिक्षण प्राप्त किया जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा और उसने व्यवसाय करने का मन बनाया। समूह से ऋण लेकर उसने मसाला पैकेजिंग का व्यवसाय शुरू किया। उन्होंने अपने व्यवसाय को सफल बनाने के लिए कठिन मेहनत की और उत्पादन की गुणवत्ता पर ध्यान दिया। उन्हें अपने उत्पादों को स्थानीय बाजारों में बेचने का मौका मिला। थोड़ी कठिनाई के बाद उनका कार्य प्रगति पथ पर आगे बढ़ने लगा और आज एक सफल मुकाम पर है।

जुली देवी के उत्पाद को तब और ज्यादा प्रचार–प्रसार मिला, जब उन्होंने अपने उत्पाद को बिहार सरस मेला में बेचना प्रारंभ किया। यह उनके व्यवसाय को अधिक लोगों तक पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण मौका था। वहां वह अपने उत्पादों को प्रस्तुत करके ग्राहकों को अपने मसालों की गुणवत्ता और मूल्य के बारे में जागरूक करती रहीं।

जुली देवी की सफलता ने उनके समुदाय को भी प्रेरित किया। उन्होंने यह कर दिखाया कि सामान्य महिलाएं भी उद्यमी हो सकती हैं और समृद्धि की ओर कदम बढ़ा सकती हैं। जुली देवी की कहानी यह बताती है कि उद्यमिता की शुरुआत किसी भी व्यक्ति के लिए संभव है। जुली देवी ने अपनी मेहनत और संगठनशीलता से अपने सपनों को पूरा किया और अपने समुदाय को भी उत्पादकता की ओर प्रेरित किया। वह सफल उद्यमी के रूप में अपनी पहचान समाज में बनायी है।

मेहनत से पुष्पा का बदला जीवन

पुष्पा कुमारी जहानाबाद जिला के मखदुमपुर प्रखंड की रहने वाली हैं। उनका विवाह राजीव कुमार से वर्ष 2002 में हुआ। ससुराल आ कर उन्हें पता चला कि उनके पति बेरोजगार हैं। शादी के बाद भी पुष्पा कुमारी ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और स्नातक तक की पढ़ाई को पूरा किया। इस दौरान वर्ष 2008 में वह स्वयं सहायता समूह से जुड़ी एवं समूह में साप्ताहिक बचत करना शुरू किया। इन कार्यों के बीच उन्होंने काम की तलाश भी जारी रखा।

इसी बीच पुष्पा देवी को जीविका मित्र के रूप में काम करने का अवसर मिला। वर्ष 2017 में पुष्पा देवी की कार्यशैली एवं योग्यता को देखते हुए स्वास्थ्य पोषण मास्टर संसाधन सेवी के रूप में काम करने का अवसर मिला। वह एक बार फिर से नए उत्साह, लगन और निष्ठा से काम में जुट गई। पुष्पा दीदी कहती हैं कि ग्रामीण महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्या सिर्फ उनकी नहीं बल्कि मेरी भी है। क्योंकि मैंने भी जानकारी के अभाव में बहुत समस्या का सामना की है।

स्वास्थ्य पोषण मास्टर संसाधन सेवी के तौर पर पुष्पा कुमारी अबतक 10 हजार से अधिक जीविका दीदियों को स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता से सम्बंधित प्रशिक्षण दे चुकी हैं। पुष्पा कुमारी को इस कार्य के लिए प्रति माह 5400 का मानदेय मिलता है। पुष्पा देवी ने अपने समूह से 20 हजार का ऋण लेकर किराना दुकान भी खोली है। समय के साथ–साथ दुकान से आमदनी बढ़ने लगी। दीदी ने अपने पति को दुकान चलाने के लिए राजी किया। वह समय–समय पर इस दुकान की पूंजी को बढ़ाने के लिए समूह से ऋण लिया।

पुष्पा कुमारी ने अब तक अपने जीविका समूह से 2 लाख से अधिक का ऋण लिया और ससमय चुकाया भी है। अभी उनकी मासिक आय 25–30 हजार रुपये है। दोनों पति–पत्नी मिलकर काम करते हैं और अपने बच्चों को भी अच्छी शिक्षा दे रहे हैं। पुष्पा दीदी कहती है कि–' अब मेरे पति बेरोजगार नहीं हैं और मैं भी आत्मनिर्भर हूँ। अब मैं और मेरा परिवार सम्मान भरा जीवन जी रहे हैं।

समहुत जीविका कृषि उत्पादक कंपनी लिमिटेड, भोजपुर

जीविका से जुड़े किसानों के फसलों, खाद एवं बीज की ख़रीद – बिक्री का एक वेहतरीन प्लेटफ़ॉर्म

भोजपुर कृषि प्रधान जिला है। लगभग 1,86,519 हेक्टेयर भूमि कृषि योग्य है। धान, गेहूं एवं मटर की खेती प्रमुखता से की जाती है। जीविका के स्वयं सहायता समूह से 94,639 सदस्य कृषि कार्यों से जुड़े हुए हैं। कृषि उत्पादों,खाद एवं बीज का भण्डारण, विपणन, किसानों को उचित मूल्य उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से **समहुत जीविका कृषि उत्पादक कंपनी लिमिटेड** का गठन किया गया।

समहुत जीविका कृषि उत्पादक कंपनी लिमिटेड: समहुत जीविका कृषि उत्पादक कंपनी लिमिटेड का गठन 24 जून 2019 को किया गया। कंपनी के संचालन के लिए सात महिला सदस्यों को मिलाकर बोर्ड ऑफ डायरेक्टर का गठन किया गया। इसके संचालन हेतु मुख्य कार्यपालक की नियुक्ति की गई। इसके अलावा अन्य विषयों पर सहायता प्रदान करने के लिए लेखापाल, मार्केटिंग विशेषज्ञ एवं क्षेत्र पर्यवेक्षक भी कार्यरत हैं।

समहुत जीविका कृषि उत्पादक कंपनी में 414 शेयरधारक हैं। शेयरधारकों के बीच उर्वरक, बीज की खरीद – बिक्री की जाती है। यह कंपनी, कंपनी अधिनियम के द्वारा पंजीकृत है। इसके अलावा कंपनी को खाद एवं बीज लाइसेंस भी प्राप्त है। कंपनी का निबंधन एवं जी.एस.टी. भी है। वर्तमान में कंपनी की कुल निधि 17,30,576 लाख रूपए है।

कंपनी की व्यवसायिक विवरणी			
वित्तीय वर्ष	टर्न ओवर	व्यवसाय	मीट्रिक टन
2023–24	3.41 करोड़	गेहूं, धान का बीज, उर्वरक	199
2022–23	1.36 करोड़	गेहूं, उर्वरक, गेहूं का बीज, सब्जी का बीज, धान	661
2021–22	2.61 करोड़	गेहूं, उर्वरक, गेहूं का बीज, सब्जी का बीज, धान अन्य	1444
2020–21	0.53 करोड़	उर्वरक, गेहूं का बीज, धान अन्य	238

प्रखंड तरारी की रहने वाली पुष्पा देवी कंपनी की निदेशक और शेयरधारक हैं। पुष्पा बजरंगबली जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हुई हैं। दीदी ने अपना एवं अन्य दीदियों के उत्पादित धान, गेहूं एवं मेंथा तेल की बिक्री कंपनी को की है। पुष्पा देवी बताती हैं कि– "कंपनी को बेचने पर सबसे बड़ा लाभ यह है कि उन्हें अपने उपज का उचित वजन और समय पर पैसा मिल जाता है।''

प्रखंड पीरो की रामरत्ती देवी सहेली जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हुई हैं। रामरत्ती कंपनी की शेयर धारक है। उन्होंने 49 क्विंटल गेहूं की बिक्री कंपनी को की है। सब्जी, प्याज,गोभी, मूली आदि का बीज, खाद कंपनी से ही खरीदती हैं। वह बताती हैं कि कंपनी में जुड़ने से कई फ़ायदे हुए। जब भी जरुरत होती है उचित दर पर खाद, बीज उपलब्ध हो जाता है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार